

विद्याया राजनं कथिण ॥ कश्चि उच्यते राजनं उच्यते राजनं कश्चि न कश्चि न
 न ॥ ० ॥ लिखितं लाक विद्यामसव उच्यते मधना ॥ ७८ ॥ नमस्ति रुलिना वृद्धा नमस्ति
 उ निना जना सुक कासु शुभं शुभं शिद्यते नैव मन्यते ॥ ० ॥ स्वसव सिमान भवया क
 कनाथुव नमस्तान यादार्थं गुन आन धन कन भवया क कनायु गद सि धरुवं मूर्धवे
 उधं यनयुयमजिव गनयन क मजिव मूर्धधे धं ॥ ७९ ॥ नहि कर्म निचत्ता नि संधा का
 न पथा जय ग्राहान मेधून निडा गथ स्था ध्या य भवच ॥ ० ॥ संधा वल स धध ना मग
 न च्छु धान सा नय मेधून याय द्वाद वय क सासु पद य धू गिम तव ॥ ८० ॥ ग्राहना

जायतया धिः १ गृही कूल य जायत अन वस्ये सय्याया सया थ दा यू ना जय ॥ ० ॥ न
 न सा नायन कय मेधून याग सा ऊक जायन पिव दन सा न क्षि न ता न ता व वनीव पाग
 याग सा थ व श्रु द्वा हा व स्यं व निव माय ॥ ८१ ॥ वद वदा गी त लक्ष्म जय हा मय ना दाम नीदा
 दय ना निरु ए व ना रू पू ना हि न ॥ ० ॥ नम वृद्धा कन वद वदा गी त लक्ष्म जय हा मय ना दाम नीदा
 व ना जा सान धा हि न याय थ धि द क रू ना ॥ ८२ ॥ या क्कानि ध्या महि यानं छि उ कर्म विव जि
 ग १ विधू न व य लि क्षा नि सम द्ध र्थं सम सू ख ॥ ० ॥ आनि क मन क मन व च क्का क दू र्वे सु
 धि म या क थ धि च क्का ना जा याय ॥ ८३ ॥ कूल नी न शुभ यत सूर्य धर्म प नायन सुवि न

यन्त्राणां विधिः ॥ १८ ॥ कलवन्तु वन्तु सयवन्तु धनवन्तु
 जनः कलवन्तु थथिदं कलवन्तु ॥ १९ ॥ कलवन्तु भनिनू द्वा अण्डाजव अण्डा
 यवयक कलवन्तु थथिदं कलवन्तु ॥ २० ॥ तमकालि कामसनेय नाति अ निमशवज्ज
 कलवन्तु मसस्य वययाक थथिदं कलवन्तु ॥ २१ ॥ मून विक्लिहिगाधिलः स
 वृत्ति पलिककः सुविचक्षण सायिच धर्मा विधि विधि ॥ २२ ॥ चकार्यैव सनार्ज
 कलवन्तु कलवन्तु सससुत्रया पलिकायाक सुविचक्षण सायिच थथिदं कलवन्तु
 ॥ २३ ॥ आयुवद कलवन्तु सर्वज्ञा पीयदर्शन आय निवृत्ता यतः ॥ २४ ॥ विधि

यतः ॥ २५ ॥ दद्यात् कलवन्तु सससुत्रया पलिकायाक नातिरुद विकलिहासिव ना कवन्तु
 कलवन्तु सससुत्रया पलिकायाक थथिदं कलवन्तु ॥ २६ ॥ पितापितृमहादक सामुक्लमिषया चकः
 सुविचक्षण यिन श्वेव रूप कान्धसस्य ॥ २७ ॥ अजाव दूनिस्यै अनि विचकन सामु सव याव
 हिद थथिदं कलवन्तु वानयाय ॥ २८ ॥ सक्तान्दकं यद्विगाथं लघु रुक्मिणि कवन्तु सर्व सामु स
 मानाकी एक वरव कडयत ॥ २९ ॥ आयुवद कलवन्तु सससुत्रया पलिकायाक थथिदं कलवन्तु
 सामु सव थथिदं कलवन्तु निविचक्षण ॥ ३० ॥ विधि कलवन्तु कलवन्तु पीयदर्शन अण्डादियमा
 दका प्रति रुव सस्य ॥ ३१ ॥ कार्या कलवन्तु सससुत्रया पलिकायाक थथिदं कलवन्तु ॥ ३२ ॥

॥ समस्त सासुक्त पण्डित श्रुतिनाथमः धीर्यसौख्य उल्लास्यत सनाधका विधियत ॥ ० ॥ रुद्रा
 कसि मर्थ सासुक्त विचक्षण पञ्च ॥ ० ॥ रुद्रा उज्जयनय रुद्र धीर्यवर्क उनीक थ धिर्क स्याना
 पति धाय ॥ ११ ॥ समस्त सासुक्त वाहनन पना जिना धीर्यसौख्य उल्लास्यत जस्वा धि
 का विधियता ॥ ० ॥ समस्त नयया सासुक्त स्व थ मवे हान स्यन सव गूल वील गुणव
 न्क थ धिर्क नृध्ववान धाय ॥ १२ ॥ मधा वी वाक् ४ पाक् पन चिक् पिन क् ४ धीना
 र्थ उर्क वादिच ॥ १३ ॥ दूत विधीयत ॥ ० ॥ मूर्खा खान तिग् वचन पण्डित अनि धि
 नवा धन झाक धीन वर्क शक् ३ झाक थ धिर्क दूत धाय ॥ १४ ॥ पार्थिव स्यन रुद्र

स्यवदा मि उ न न न न यन स व द्ध न ना जा रा उ न लि त थो व च ॥ ० ॥ ना जा व उ न वि न व वृद्धि
 या द व स य न व द्ध न ना जा या त द्धि मान या र्ग ध द्ध र्ग अ लि या ॥ १५ ॥ जग य व कू लि ना ना द
 या कृ त्ति सं ग र्हा ज्ज दि म ध्वा व सा न न न त या र्ग ति वि क मा ॥ ० ॥ थ स नि ध्वा य न क न वर्क क न रा
 अ लि या द ज्ज दि म ध्वा व सा न न वि क मा या म या क ॥ १६ ॥ पण्डित दू उ न ४ स व मू य दा र्ग मु क व
 ना ४ ग र्हा मू य लि न पा र्ग ३ क न थ ग ॥ ० ॥ उ न वर्क वि च क्ष न कू नि दा ख न स म क् मू ख या क ध
 न मू य दाल द्धि ता क न् अनि क् क व य मा न ॥ १७ ॥ पा र्ग ३ नि थ र्ग मा न न स कि ना कू लि या उ ना ४
 न न न न नि वा र्ग व पृ थ त थ ध ना ग र्ग ॥ ० ॥ अनि न या ज व या का र्थ स ना जा रु ख ना उ न ज स कि रि द्धा

॥ ५५ ॥ सुहृन्नेव गुरु धनं वा हयायुः ॥ ११ ॥ मूर्खानि चाकामाननं तथा दाया महियत अपवार्थनाग
 नान्न नलकयुर्भवेत् ॥ ० ॥ मूर्खेन याजत्रया कार्यं स राजा सुखतादायन दयू अपजस
 लायू अपकिरि यलयसनरकवनिव ॥ १८ ॥ तस्मादस्मिन्वया निर्युधर्मकामार्थं च द्रव्यं पुणव
 कनित्याकृतं पुणदिनविस्वज्जयि ॥ ० ॥ धनं च न वृणाजान धर्मं अर्धेन कामवृद्धिं चार्थं धर्मं पुणदि
 नं कर्तारं तं पुणवकम् याजत्रयं पुणहीनं कृपया जन ॥ १२ ॥ यकिं विल्लु नूतं ह यं सुरवाय दि
 वा गुरी तन सर्वं दत्तं नाज सुकृतेः इत्थं लेपि ॥ ० ॥ पुणवकं याजत्रया कार्यं सुरयाद अप
 सुरयाद राजा सुलक्ष्मीयायुः ॥ १० ॥ यथा रुमय विक्रयं तापनादन रुदनं तथा पूनयमय वी

कूलणीन कर्मना ॥ ० ॥ गन्धधनसा क्लृप्तं दार्यं ताकथं दावं अर्धं पूनयपत्रिकायाय क
 र्मनं गुरुवन ॥ ११ ॥ गन्धधनयकमाननं वाधवावगनगर्म अपरिक्तावतथामिर्गं राश्यां वि
 विरवाकर्यं ॥ ० ॥ उन्मोवनहीतं गन्धय क्लृप्तं सज्जनतन्धय अपदास मिश्रहीतन्धय वि
 यर्हिस्तं मित्रहीतन्धय विघ्नयमदर ॥ १२ ॥ रथ्यावरुविधा राजा नूतमाधर्ममिधमाशत
 त्रियाकृतं तथा गन्ध विविधवकर्मसु ॥ ० ॥ उन्मोवनं अनगविभिन्नन्धय र्हिं ग्वं र्हिं ग्वं क्रीहि
 न सत्रवाचनं मर्हिं ग्वमहिं ग्वनाचन ॥ १३ ॥ अनस्यं मुखत्रकृतं तद्युयगनीनं गय अप
 नस्यं मुखकृतं तज्जुहोतनवाधिय ॥ ० ॥ अनस्यं स्त्रायु तमकावि रुधिं वाहिं रकीन

रुव. थथिं वृद्ध. थथिं वृद्ध नीवेन. गालतमान. नाजान ॥ १७ ॥ गजगस्वामी मस्वग. अतिगं क
 य निर्ययि ॥ कपनादवि. गर्थे क. गस्वार्चकगनासर्ग ॥ ० ॥ उग्रमरुवस्वामि. गालतमान
 हर्मा कपन कार्य. श्रु कार्य. शिठ. मरिं मसिलदास. धक्कनाजा स्यन गालतमान ॥ १८ ॥
 वासरा यो. सुगामूर्ध. यवक वाची चानकः। निस्तराव धूर्वर्ग श्रु गजद स्य महसूर्य ॥ ० ॥
 विपगिस. मतिवृद्धी. मूर्खकाय. क्वाया यामवद त्वागिनि. सनहामद. सज्जने. धगगाल
 गान. मरुगजनया. सुर्वे देय ॥ १९ ॥ नक चिक्क स्य विस्मिर्ग. नक चिक्क स्य चित्पीय ॥
 काननादव जायक. मिगानि धूलिपूर्वस्थ ॥ ० ॥ मिणदयिर्व. सणदयिर्व. साधूरुयि

वै. कावन ॥ ११ ॥ कार्यो थिरजगलाका. नना कपनमाथग ॥ वत्सल. कर्षे दृष्टाप
 लि दत श्रुतिमागर्ग ॥ ० ॥ कार्यया अनूयन. लाकनरुजयवीव. गथताधायसा. साचानद
 इतानमदयाव. मासातावतार्थ ॥ १८ ॥ कृतवर्ग निनानिजा. अतिफल्यकृतावति. कृत
 होष्टदविधाना. इज्जनस्य कृतकमा ॥ ० ॥ यसनिरुनदास. कदमद. लफरुवक्रया. न
 लेमदा. तासनरुवक्रया सुखमदा. इज्जनया कस्यमामदा ॥ १९ ॥ गत्कनस्य कृतामाया. इ
 र्जनस्य कृतकमा. वेष्मलीना कृतास्त्रहा. कृतसर्पव कामिनि ॥ ० ॥ यया कसर्पमदा. इज्ज
 नाक कसामदा. वेष्मया कस्रलमदा. कामिनि या कसर्पमदा ॥ २० ॥ इवस्य वरावाजाः

लानां नृधिलं वर्णां वलं मूर्खस्य मोनर्वां ओलनां अणुशिवर्नं ॥ ० ॥ दूर्ध्वनया वल
 नाजा वालकया वलखाय मूर्खया वलना ण मवास्यं चान् ब्रूया वल अस्स सहाय ॥ ८१ ॥ का
 श्रित अर्थहि नस्स सफ्फया तिणा सगण्य च ददयसा कदम्बं च सुददग्नि सोमसि ॥ ० ॥ प्राणि
 याद सफ्फया रायन अदवान् उवाभाया वधगता इध्वनिकया वचादया हगिया खान सान माहासू
 त्र ॥ ८३ ॥ आउलका गन पार्फ दूतिस्स सफ्फ विरुह नाजा दानं सान वाय निस्स निसवान्धवा ॥ ० ॥ नाय
 संधरान विपस्सि संधरान सफ्फया रायन अदवान् अर्थिं दविवान याकक्क वन्धूअय ॥ ८५ ॥ रावसू
 द्धि मनुजानां अतर्वां सर्वकर्मसू रावदानं चुदिताकाका रावन दूहिता नर्वा ॥ ० ॥ मनुजया रावमाण



नसूद्धितं निलिया खान चूंवनपलं रावमाणन ॥ ८६ ॥ नदवा विदगकोक्क पाखानन चमत्तय
 रावधू विदगदव गस्साहा वमहर्कन ॥ ० ॥ लाहासं चासं सिंसं दवमद्द रावनाख गनरावना
 अन्नदव ॥ ८८ ॥ निख्यानां दवमाचारं अनमाचारं दवगा दवगाया धिगारगकिं वाक्किना जनदव
 गा ॥ ० ॥ निज्जया दवउतू उतूया दवअन निलिया दवपूतू लोकाया दववाक्कि ॥ ८९ ॥ विप
 पण्णउथवक्कि माचारं पण्णदवगा पृथियण्णउथमागा मिण्णपण्णउथउथ ॥ ० ॥ वाक्कनधयअग्नि
 थमा मधयपीथि विथे कायधय मिण्णं आचार्यधय दवर्थं ॥ ९० ॥ उतूलनिद्धिजा निनी वक्किना
 उक्किना उतू ॥ यमिनेकं उतू निनी सर्वेसायां गता उतू ॥ वाक्कनया दव अग्निर्वा चवर्त्तया उतू वा

वाङ्मन निविद्यायुक्, थवयूक्ख, सकयायुक्, अख्यागववक्की ॥ ८२ ॥ उरुमस्याधि
वर्णस्य, निविद्यायिगुरुमाणा ॥ पूजनिजा जथाकीन्यायं, सर्वस्याख्यागभायुक् ॥ ० ॥ नीच
कनासनी, उरुमकनासनी, युक्कनाकाव, अख्यागतनवलदास, स्यासिनीयायु ॥
२० ॥ दवगापूजयहृक्, रय्यादात्रनपूजयत्, सूडपूजाप्रकाशन, विद्यानामरि
वन्दन ॥ ० ॥ दवपूजायायहृकिन, उर्गवनपूजायाय, दामविर्ण्य, सूडपूजाया
य, (थर्थ) वाङ्मनपूजायाय, नमस्कावन ॥ २१ ॥ धर्मस्यमूवनाजानी, तयमूवचवाङ्म
ना, वाङ्मनामसुपूजक, तयधर्मसिनातनी ॥ ० ॥ वाजायाधर्ममूल, वाङ्मनायातयनः

अनं जनयाः वाक्मन पूजयाय अनं धर्म ॥ २२ ॥ माचा अरुवत धर्म आचा अरु
लत धनी आचा अरु लमा प्राणि आचा अरु किल कनी ॥ ० ॥ धर्म दय कीर्त आचार्य
न नाना लकन दय कीर्त आचा अन ॥ २३ ॥ रा अरा अन स किंश्च वनिस किंश्च लधि
र्य ॥ विरुवा दान स किंश्च नाल्य स्थित ल स रुली ॥ ० ॥ न रुवया रा अन निसा मर्थन
यन मिवाचन य दय धिवाव सय म स रुय चि कृति न यन धर्म नायू ॥ २४ ॥ वाव ग्येव
यन धर्म सनि र्थ यन पूजिनी रुवाना मयि य कानां भगवती न यन रुवगू ॥ ०० ॥ वाल
द स धन याय मान अनि र्थ स साव श्व कन गध्व धीव सा सिमा स वा द स कृदा व क

मावद, वा जायामिवा निति, ॐ तत्र जनयामिवा वलिप ॥ १ ॥ वा जाधर्मनिधर्मकृत्वा
 यथायसमागर्म वा जाना इति दृष्टि स्यात् ॥ अथ वा जातथा यजा ॥ ० ॥ वा जाधर्मि श्वसा
 यजाधर्मि वा जायायि श्वसा, यजायायि, वा जा इति दृष्टि श्वसा, यजा इति दृष्टि, गथवा जा अ
 थ यजा ॥ २ ॥ उद्यमसारुसंधिर्द्यवलवृद्धिपवाकमः। यद्यन जस्य विधीक, गस्या दवापि
 सकित ॥ ० ॥ उद्यमसारुसंधिर्द्यवलवृद्धिपवाकम, ध्वगासंशक पूरुख श्वकाव, य
 वसंखाययिव ॥ ३ ॥ सयदाननशदन, कुमनवल लनच। सर्वविमुसदासफ, द्यागनी
 यानवाधीय ॥ ० ॥ सयदाशदवपू, यातिर्यतवलवमुभाचर्क, ग्वनयवा जान, ध्वग उपायन

सयमाचकमात्र ॥ ७ ॥ याथ ग्यनिमु (गनागि, रा) गयविजन सरुः। सामुवः। अवनथा धा, न
 यतयैश्चलकन ॥ ० ॥ स्याण स्यानिश्रय, उयशाग रुकुयस, धवयविजन वृथनं सामु
 स। वाधशैश्च ननस था धा श्रय, ध्वकागा वा जाया लकन ॥ ८ ॥ उरुमयगियागन, गूल
 शदन या जयत्। लघ्वमर्थयदानन, समगुल्यपवाकम ॥ ० ॥ सत्यवृथथा जवयान
 मल्लानन, गूलथा जवय, शदन, वा सिया जवय, धनविस्ती, गुल्यथा जवय कृतानि कान
 नीगव ॥ ९ ॥ आत्मद्विड, यवाविद्या, विद्या द्विडयवा स्यच, गृहकर्म ॐ वा गमि, यवरा
 वीचनकय ॥ ० ॥ धवदावनमवयाग वियमकव, मवया दोखन श्वसा, गथधिग



न कृत्वा स कायवद्विष धर्म्मव्यवर्त्यतयमात्र ॥ १ ॥ मनसा विनिर्गकार्यविवनसा
 नय कायम ॥ मकुलकनशुटात्मा कार्यासिद्धिचजात ॥ ० ॥ धवमनसानविनवर्ण
 तया कार्यवचनयकासयायमतव ॥ धधमकुलकन कार्यासिधवकासठनियकास
 याय ॥ ८ ॥ उयकावगृहीतन गण्डगण्ड समुद्धने पादलग्नकावकन की० केनेवक
 धका ॥ ० ॥ उविगयागकास गण्डनयाकाशवसनी कायमावख क० नवन कथनय
 यायिकायार्थ ग्मनिवाकनस्यमावख ॥ २ ॥ वरुदमिष्टकभनयावकायवियर्ज
 यागयेवयायनकाव विद्याद्यटिमिवास्मनि ॥ ० ॥ धवविमतिववस गण्डशवसनी

वस्य कृयमात्र धवसयलिङ्गवकास वस्य कृयागण्डव गधस्वकासधवयागावकृयाधर्मा
 वरुयस्वकन ॥ १० ॥ रुजिङ्गकिंकतावत्त मधूवकिंनरावध मधूववव कल्याणि लो
 कार्यमधूवयिया ॥ ० ॥ राजिङ्गास्त्रयाववचनकानकात चाकूवव कातसावाकस
 मरु आनन्दश्य सगुखश्य ॥ ११ ॥ जिङ्गायवसलकि जिङ्गायमिष्टवाधव ॥ जि
 ङ्गायवधनसायि जिङ्गायमवर्नध्वव ॥ ० ॥ लङ्गीवसवयिर्वजिङ्गास मिष्टवाध
 ववसवयिर्वजिङ्गास वधनस्ययि जिङ्गास मवनश्यूर्वजिङ्गास ॥ १२ ॥ यीयवाक
 यदानन सर्वगुया निङ्गकव ॥ गस्मारुदिवकानया किवाक्ययिदविडता ॥ ० ॥ यीय



[illegible]

नीयार्थं त्वानकककुक्षाय गंतव्यं तत्तयं त्वच श्याय मंतव ॥ १७ ॥ अत्रिमिष्टसूक्ष्माणीनां मधुसूक्त
थं विनायुत्र ॥ आनवृद्धिर्निर्मलात्मा शच सर्वघ्न न स्याति ॥ ० ॥ गच्छ वगच्छ यन्न न मिष्टव मिष्टव
न मधुसूक्तनवाकृष्टं ऊर्ध्वं धाय मिष्टनां गच्छनां मसि द्वास धनया सर्वकार्जनास इयू ॥ १८ ॥
अनाय वयं कुरुचि अनाथ कनक यिय ॥ अतुलं सर्वरुक्मिच न न सिद्ध विन गति ॥ ० ॥ मन्त्र
कन अयमश्वस्य वयया कक्री जाजा मद्रुद गग त्वाय यत्र द्वास ग्राय सनिद मनिदन न द्वास
यमन्त्रकन नानं मायुव ॥ १९ ॥ ककानकान माशानि काव स क द्यया गम ॥ कस्यार्द्रं कात्र
मसनि विनिचिना मद्रुद्रु ॥ ० ॥ गुर्या कन सद ॥ खमद्रु सूना न द ॥ खमसि व कात्र यान

दिश्राकारं विशदवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं हस्ताब्जभ्यां व
दुकमनिशं शूलहरौ शोहधानम् ॥ ४२ ॥ ताम्रसंध्या नमः
ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुराउमालातं म
हेशं हिज्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ शृतिं खड्गपाशभ
यानि ॥ नाजं घराटां कपालं करसरसिरुहै विभूतं मि
महं संपाकल्पे त्रिनेत्रं मतिमयं विदुः सात्किं क्वि
रुशयम् ॥ ४३ ॥ अस्म श्रीभापडुहारा रदुहारे

स्तोत्रं मंत्रस्य बृहदारण्यकस्य विष्णुसंस्कृतं
नाम अक्षयपुत्रो ह्रीं वीजं बहुकायेति शक्तिः प्रनव
तं कंमभाभाष्टसिद्धये जये वियोगः ॥ ओं ह्रीं
एभ्यां नमः ॥ ओं ह्रीं वीतजं नीभ्यां नमः ॥ ओं ह्रीं वृ
हन्मथ्यमाभ्यां नमः ॥ ओं ह्रीं वे अनामिकाभ्यां नमः ॥
ओं ह्रीं वी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ओं ह्रीं वः करतलकरप

ह्यभ्यां नमः॥ एवं हृदयदि॥ ॐ भैरवो भूतनाथा यश्च
भूतात्मा भूत भावनः॥ क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः॥
भद्रियो विराट्॥ ४४॥ श्मशानवासी मां साशी खर्प
राशिस्मरानकुत्तर॥ रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्ध
सेवित॥ ४५॥ कङ्कालः कालरासनः कलाकाण्ठतनुः
कविः॥ त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च वतथापि जललोचनः॥ ४६॥

राशिः खड्गपाशिः कङ्काली धूम्रलोचनः॥ ४७॥ भ
रुभैरवो नाथो भूतयो योजिनिपति॥ ४८॥ धन
हो धनहो विवधनवान्प्रतिभावन॥ नागहारो नाग
पाशो योमकेशः कपालभृत्॥ ४९॥ कालः कपाल
मातीवकमनियः कलनिधिः॥ त्रिलोचनो जलनेत्र
स्त्रिशिखिव त्रिलोकपः॥ ५०॥ त्रिनेत्रतनयो दीभ्यः शा
नजनप्रियः॥ बहुको बहुवैखश्च षड्भ्रवरधारकः॥ ५१॥

भूताध्य भूः पृथुपतिभिर्भुक्ः परिवारकः ॥ धूर्तो दिग्ग
वरः भूलीहरिराः पाराडुतो वनः ॥ ५१ ॥ प्रशान्तः शांतिद
सिधः शङ्करप्रियबंधव ॥ अहमूर्तिनिधिराश्वज्ञानव
स्तुतपोमय ॥ ५२ ॥ अष्टाधरः षडाधारः सर्वयुक्तः शिखी
सरव ॥ भूधरो भूधराधि शोभूषति भूधरात्मज ॥ ५३ ॥
कङ्कालधारि मुराडी वनागयतो पवितवान् ॥ जम्भारो
रोदनन्तमीमोरशा भो भरास्तथा ॥ ५४ ॥ शुद्धो नि

रत्नप्रणोदैत्यहा मुराडवति भुग्वति भूनाथो वाता
वातपरक्रम ॥ ५५ ॥ सवापताररो दुर्जे दुष्टभूतनिषे
वित्तः ॥ कामी कला निधिः कातः कामिनीवशकदशी ॥
॥ ५६ ॥ पूर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुविस्तुरिति वह्नि ॥
॥ ५७ ॥ अष्टोत्तरशतं नामांभैरवस्य महात्मनः ॥ मया ते
कथितं देविरहस्यं सर्वकामद ॥ ५८ ॥ यत्र दपठति

स्तोत्रं ना मा हृशत मुत मं ॥ नत स्य दुरितं किं वि द्रो गा
शां व भयत तथा ॥ ५४ ॥ नव मा रि भयं किं वि नू व भू
त भयं तथा ॥ न शत्रु भ्यो भयं किं यित्वा पुया मानवः कवी
रु ॥ ६० ॥ पात के भ्यो भयं ये वयः पठे स्तोत्र मुत म म ॥ मा
ही भये राज भये तथा वीरा ग्नि वे भये ॥ ६१ ॥ औत्पा ति के
महा घो रे तथा दुःख प्र दर्शने ॥ बन्धने व तथा घो रे पठे
स्तोत्र म नूत म ॥ ६२ ॥ सर्वे प्र राम मा या ति भयं भै रव की

त नार ॥ एका दश सह स्रि तु पुर श्वर रा म या ते ॥ ६३ ॥ या स्त्रि
सं धुं पठे दे वि सं वत्सर म तं दितं ॥ स सिद्धिं प्रा पु या दि शं
दुर्लभा म पि मान व ॥ ६४ ॥ ष रा मा सा दु मि का म स्तु त पि ता
प्रा पु या न्म हि म् ॥ राज शत्रु वि ना शा र्थं ज पे न्मा सा ह कं व
ध ॥ ६५ ॥ रा त्री वार त्र यं दे वि ना श य ये व शा त्र वा न् ॥ ज
पे न्मा स त्र यं म त्पो रा जा न व श मा न य त् ॥ ६६ ॥ ध ना थो
वा सु ता थो वा हा रा थो य स्तु मा न व ॥ ज पे न्मा स त्र ये दे वि

कारमेकं ताथा निशी ॥६१॥ धनं पुत्रौस्तथा हारानुप्रापु
यान्नत्र संशयः ॥ तेजिरो जात्यमुद्येतवद्दोमुद्येतवं धना
त् ॥६२॥ भीतो भयात्यमुद्येतदेविसत्त्वं न संशयः ॥ निज
देश्यापिवद्दोयः कारागृहनिपातित ॥६३॥ शुद्धताबंध
नंप्राप्तः पठेद्यदिहीवानिशम् ॥ यान् यान्समिहते कामां
स्तोस्तान्प्राप्नोत्यसंशयम् ॥७०॥ अप्रकाशं परं ह्यन
देयं यस्य कस्यचित् ॥ यं यं विंतयंते कामं पठंस्तोत्रमनु

त्तमम् ॥७१॥ तंतं काममवाप्नोतिसाधको नात्र संशयः ॥
सुकुलीनायशातामक्रतवेदमवर्जिते ॥७२॥ दद्यात्तोत्रं
मिहं पुराणं सर्वकामफलप्रदम् ॥ इति क्रत्वा ततो देविना
माह शतमुत्तमम् ॥७३॥ संतोषं परमं प्राप्य भैरवं स्वम
तात्मनः ॥ जज्ञापय रया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरि ॥७४॥
इति श्री उद्दामरतंत्रे वडुक भैरवस्तोत्रम् ॥०॥ समाप्तम् ॥

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीवैद्यगलिव्यते नमः ॥ वहिरा को उपाई ॥ कुशीलाः निर
विशि वा फ्रि जल सं ग सा तो १ व्या ति वेताः कान द्यात नः वहिरा का
न शिा को हो ॥ सि उद का दु पा जाई धि व प का उ न मु स तिः सी धी
नु पि प ता ई सा मा गर मि स नु त व का न हा त नः वै रो नि को होः
मा हुर ये ति का न हा त नः का पा क्या को नु को हो ॥ व न को दा त धी
ति का न हा त नः का पा क्या को नि को हो ॥ को दा ये ति हर नि का म्र ये
दि का न हा त नः ॥ जन्म को वै हो नि को हो ॥ सि उद का पा त पो ति र स

हा त नः का न द र क दे नि को हो ॥ ष स्या तो पा त पो ति र स का न हा त
नुः पा क्या का न नि को हो मा हुर का पि त का सां का सां मा दा ष त नः का न
हा त नः ॥ उष्ण का न नि को हो ॥ अथ गर क प त को उ पा क र ॥ प हिले व
पा त दि नः ॥ वित को दु ध नः पि हि षा नः गर क प त जा ॥ वै त्या हर द
भा ग १ का रो ता है दो भा ग १ पो त्या सु ठो भा ग १ मि सि व र्ज ग ति त ग
नु ति ता वि द का पा नी सं ज पि नु गर क प त जा ॥ चि ता को ज रोग उ
त सं ग पि नु गर क प ट जा ॥ पु न मिं गिरा ज र स मि ति व ड नि नु को के ता चु प

जुमति वृद्धिराष्ट्रवि ह्यानावानु गरकनरजा ॥ ति क्षेन ह्येवमप्येनाकाजरोविजघात
नपाशुरावाधन धावनत्ताग ॥ गानुकोउपकार ॥ छिउज्याजुवाजुसुठेसौंचलाचिनाका
जरसिवालिकाजरासमगरिबानुनिकोहो ॥ चिताकाजरापिपलाकोजरोसिधोउवा
नुहउरासुठेसामगरिचुरजगरितातापासिसंगवानुअथवामाउसंगषानुगानुटाव
अवभोकनलागनिआनिजामदाग्नीजासरिपुष्टोहो ॥ सातठेकाठनधिवतातनला
गिबानुगानुटावअवरहटिपिहूबानुगानुनिकोहो ॥ अथप्रसुतिकोउकार ॥ धनुराको

जरोजोनिभिचघालनुछोतेप्रसुतिहो ॥ आंनकोजरोअंगुलचारघालनुछोतेप्रसुतिहो
वरकोजरोउन्नतिरकिअक्षेतापातिलेपुजागर्जुनवमेहराहलेउबेलनुकपातवाधनु
छोतेप्रसुतिहो ॥ पुनर्वाकोजरोघोटिजोनिभिचघालछोतेप्रसुतिहो ॥ मंत्र ॥ नुकोंसकोंसवि
पकोंसमहकोंसस्वाहं ॥ रुसमंत्रभुजपात्रमापंचसुगंधलेलेषनुधुपगरीगरिगलावा
धनुसुषप्रसुहो ॥ नाभिसंवगेहायातिनुछोटेप्रसुतिहो ॥ गेलाकाकरिकाजरापा
निपिनुछोटेप्रसुतिहो ॥ अथतारादेषनाउपकार ॥ अगस्तिकोफुलकोरसअंजना

गर्जदिनतारादेवै

गर्जदिनतारादेवै ॥ ॥ मुसाउपचार ॥ ॥ तिलचुकहरितातविराताकोविष्टिवाक्त्रिमु
मतिमिसिजिउदेमुसोचुप्रनुतवधेदिनुतवमुसाधनलाग ॥ मुसामंत्र ॥ ॥ आइलन
वजिमिदंगसंकरमुसाविशरिवापभन्दारिइतिमुसाकोरितीउतिजातिवालुचाहिथाबुगो
वाकषरोसोसोवजुआगलोषंतकोरसिनोविजायककिहुहाईसमुद्रपारिसरसुंवातुबोई
नुमुसाजा ॥ अथमोहनीउपचारकहो ॥ सहेवाप्रसिक्तोविष्टितिनुआ
नकाफुतकोरससंगतिनुपुष्टवस्यहो ॥ ईद्रजेपकोभुवनाजव
नगरीसुम्निकाभंगतेपनगर्जुतवस्यंतपुष्टनजागआपनावस्था

हो ॥ जोतोवनभीरीजीराजयतिहैकत्रगरीतिषेनश्रेत्रपिहिकन
ठिकोलाउनुतिलोकावस्यहो ॥ सबमुषिप्रधोमुषितजाजिरीकाने
काजोतोवनसमापुक्तगरीतिलकंजगदोहनंदादिनाम्रगुठातर
कोहालातचुकरतमाजुकोथोपोवनसगमिसिपाकसजषुवा
उनुसभरुवावमनसिला ॥ अथसमुद्रफुलउपचार ॥ समुद्रफ
मरीबनासदिनुप्रहोतरसयकिराजर ॥ समुद्रफुलहतेदोघिवना
दपुनर्नवाकोजरसेघोटीजोनीभित्रघातनुहाटेपुसतिहो ॥ मंत्र ॥
नुकासकोसकीषकोसमहकासस्यादा ॥ यस्तुमंत्रसोनापत्रमाहा

पुं वसुं ग धंते ते लेष न धुव गरि गता वा ध नुसुष प्रसु ति हो ॥ ना भी
संष गो जा घा ति नु हारे प्रसु ति हो ॥ गुवा त का करिका जरा पा नि सं
ग पि व नु हारे प्रसु ति हो ॥ अथ ता रु दे व ना उ कार ॥ १ ॥ सि को प्लु त को
र स प्रं ज न ग नु दि न ता दे व ॥ ॥ मुसा उ वार ॥ ॥ ती न नु क ह रि तार वि रा ता
को वि ष्ठि वा क्रि म्र त्र ये ति मि सि जि उ दो मु सा पु पु र्नु त व डो दि डि नु मु
सा ध र न ता ग ॥ मु सा मंत्रा ॥ आ इ त न वा जि मि दं ग सं कर मु सा वी दारि का
य भं दारि ई ति मु सा को रि ती ड त्री म ज्ञा वा लु या हि था यु जौ वा क्त व रौ सो सो
व त्र म्ना ग तो षं त को ठ सी तो वि ना ये क कि ड्हा इ स मं द गारी जाई ग ॥ ५

वा लु वे ड नु मु सा ज्ञा ॥ ॥ फ हा ना स दी नु स न्ध ज्ञा ॥ स मु द्र फ ल का जि म्र ज
व ग नु म्ना षा ति रि मी रि ज्ञा ॥ स मु द्र फ ल मी ल तेल म्रं ज न ग नु म्ना षा ड
ष दो ति ज्ञा ॥ स मु द्र फ ल का क्रि को ड ध म्र ज न ग नु म्ना षा के वी इ रौ
ज्ञा ॥ स मु द्र फ ल सि धा हि र सा न्ना स दि नु म्ना धा ता ज्ञा ॥ अथ मु
स ति प्र ति कार ॥ मु स ति ग व उ त षा रा नु ति प त्र रौ ज्ञा ॥ मु स ति वी
ली क ठ उ षा नु पे ठ स ह ज्ञा ॥ मु स ति ग व त व र न ग र नु प का ड
नु फ रि ड्धा सि त प का उ नु त व स का उ नु त व स उ हा नि मु स ति षा

नुवा जी प्रन्नि पुत्र पावा । मुसति भ्रि गिरा जषा नुका सो जप
सा सो जा ॥ मुसति दहिषा नुप्रांग घस नुदु श्री कजा ॥ मुसति दु
दषा नु रहे इदि जा ग ॥ मुसति केरा षा नु सीरव था जा ॥ मुसति
तलु ने षा नु गां नु ठा वम्मा वा ॥ मुसति दहिषा पंदुरोग जा मु
सति कुमिंदो षा नु हियो उह उा निको हो ॥ मुसति पिपता षा नु
फि पो जा ॥ मुसति मरिच पिपता षा नु म्मा षा उह उा निको हो ॥ मु
सति भ्रि रोज षा नु ह सी जा ॥ मुसति जवा नु षा नु या युरोग जा ॥ मु

सति मदिषा नु पेत का नु कामर ॥ मुसति भा जे षा नु स रोग जा
॥ मुसति निर्दु डिषा नु सरीर पुष्ट हो ॥ मुसति वाक्कि दुध षा नु
सरीर पुष्ट हो ॥ मुसति वितो षा नु कान हात नु कान पा क्का निको हो
॥ मुसली अयता षा नु लेष विषनरा जे ॥ मुसति षां ड षा नु प्रमे हजा
॥ मुसति मस ष नु निल ज रोजे ॥ मुसति मदिषा नु पेट का वायु जा ॥
अथ भरमस्वर प्रतिकार सी उ उ का दु पावी या नु न हा डिघा लि मु
उनु भ स्म गरी पोर नु सो भ स्म भा ग १ मरिच भा ग १ सुठो भा ग १

हिरणी भाग १ प्रकृत कला भाग १ जोई फल भाग १ विपरा भाग १
ऐति सामागरी विपरा गति तग नु विरा हा प उ प्र मा न वा नु
फि सो जा जत ग्रह जा का सो उ य सा सो जा ष य रा ग जा ॥ श्रेत्र से ज
जा भ्रा जिन जा वा यु उ ल म जा ॥ पं उ रा ग जा का घी सो वा छा को प ठ
क्या जं त्र अथ वो या त को म कि को ज त्र अ सु स ग ध ले त
ष नु आ इ त मं ग ल दी न गा ई भे सी का द्र गर म हा कु स
क नी रि उ ग रि मा हा जा न घा ल नु त व जे रि मा हा जा न घा ल नु

वो या त मा का जा भ्र उ र को वि षि अ द वा को वं को हं क
सं ग प्र क नु स र्व जा ई भे सि को वा धा जा ॥ अ थ अ उ ला ज रा को उ
पा र ॥ उ र्जो भू ठो उ मा ति पि उ नु ज रो जा ॥ अ रि उ का ज री कू ठा ई
ज रो भू ठो उ र्जो ति तो पा नी उ मा ति पि नु ज रो जा ॥ द्वि ग जि री वि
ति जा ई का धि व सं ग ना स पि नु प्रो ता ज रा जा ॥ वा द ह्या त्या उ मा
ति पि उ नु ज रो जा ॥ सि वा ति वा स का ना ग थो ता वा भा ग उ गा ल नु
सो लो ला भा ग उ मा ल नु म ति रा पि प ता भू ठो हा ले अ ष वे र जा ई फ

ललितवागयेति मिसिवस्त्रग हितग नुतवषाकृजरीजा ॥ पंचसुगंध
 ले भुजपत्रमातेषनु
 धुपगनुविजवासा वा
 ग ॥ माषको विसतिघर
 भोजमासा तिगया भा
 पतेरा निकालुना ॥ इजंत्र भुजपत्रमास्त्रसुभ्रुजंघलेषनु जितपत्र
 धि भवतथकु जाईमा नी सका होरा हो रिति ज्ञ ॥

२	४	२	७
६	३	६	५
६	३	६	६
६	३	६	६

पंचसुगंधले भुजावात्रमातेषनु गौकुलधुपग
 रनुजता धनु वंउथी जा

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
५	५	११	१५

२३	२४	२	७
६	३	२३	२५
२६	२३	६	१
६	५	२५	२१

जराको

गता वा धनु हाटे प्रसति हो

६	३	६	५
६	३	६	५
६	३	६	५
६	३	६	५

२	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
५	५	११	१५

मोई पोई मिह नु

पंचमगंधलेख पंचमगंधले पंचमगंधले पंचमगंध

१२२४२	६	१६२१	२६	८१५२	७	वाला	६१२२	६
६३२१२०		६३२४१६		६३१२११	वाध	६३१०	त	
२३१६८	१	२०१५८१		१६६८१		१२६८१		
६५१२२२		६५१६१२		६५१०१३		६५८११		

कटा केटिनरो पाइतेरुयाउ नुवाजित पञ्चरो गजा



पंचमगंधले पंचमगंधले पंचमगंधले पंचमगंधले

८१५२६	८१५२६	२३३०२६	सीसीला॥
६३१२११	३३१३२२	६३२४६	केवदत्र॥
१६३१६१	१५१०६१	२८२४८१	सीसीला॥
६५१०१३	६५१११६	६५२५२५	

जुता लिख॥

उत्ताजित॥ वेवाजित॥ सत्रुलाइजित॥ राजवश्यता
 ३० पाऊंतीमं जितमा सानेजां सासांजुका जितमत्र॥